

Est. Year-2000

Kamdhenu Sevabhavi Sanstha's

2F12B

# VASUNDHARA COLLEGE OF ARTS, SCIENCE & COMMERCE, GHATNANDUR

NAAC Reaccredited 'B++' Grade, With CGPA 2.77

Affiliated to Dr. Babasaheb Ambedkar Marathwada University, Chhatrapati Sambhajinagar.

**Dr.Arjun More**

(M.A.,M.Phil., Ph.D.)

I/c. Principal



Mob. 9421922138

Mob. 9421342148

Mob. 9822898727

Website: [www.vasundharacollege.org.in](http://www.vasundharacollege.org.in)

E-mail - [Principalvcg@rediffmail.com](mailto:Principalvcg@rediffmail.com)

Ghatnandur, Tq. Ambajogai, Dist. Beed, Pin - 431519 (Maharashtra) E-mail - [vasundharacollege2000@gmail.com](mailto:vasundharacollege2000@gmail.com)


Outward No.VCG/20 20

Date -

### 3.2.2

Number of books and chapters in edited volumes/books published and papers published in national/international conference proceedings per teacher during the year.

Sl.no	Name of teacher	Title of book	Title of chapter	ISBN number	Page No.
1	Dr. Kotule B.M	katha sahitya aur kisan Vimarsh	kisan Vimarsh(poos ki Raat)	978-93-90052	2-7
2	Dr. Kotule B.M	Hindi yaatravrutant sahitya	Govind Mishr ka yatra sahitya	978-81-969338-9-0	8-14
3	Dr.More A.M	Swatantryottar Bharat: aarthik Aani Samajik Vikas	Navin Shaikshnik dhoran samoril Aavhane	978-93-91220-89-1	15-20
4	Dr. jogdand M.B	Technology, innovation and Social Media	Maatdar jagrutimadhe prasar madyamanche Yogdan	978-81-19998-40-1	20-27

  
**VC PRINCIPAL**  
Vasundhara College of Arts,  
Science & Commerce, Ghatnandur  
Tq. Ambajogai, Dist. Beed

# कथा साहित्य और किसान विमर्श



डॉ. बबनराव बोडके | डॉ. वीरनाथ हुमनाबादे

### अस्वीकरण

वान्या पब्लिकेशंस, कानपुर द्वारा प्रकाशित लेखों/शोध पत्रों में व्यक्त विचार योगदानकर्ताओं के अपने हैं। वे आवश्यक रूप से संपादक/प्रकाशक के विचारों को प्रतिबिंबित नहीं करते हैं। संपादक/प्रकाशक इन लेखों/शोध पत्रों की सामग्री/पाठ से उत्पन्न किसी भी दायित्व के लिए किसी भी तरह से जिम्मेदार नहीं हैं।

ISBN 978-93-90052-62-2

मूल्य : आठ सौ रुपये मात्र

- पुस्तक** : कथा साहित्य और किसान विमर्श  
**संपादक** : प्रो. (डॉ.) बबनराव बोडके, डॉ. वीरनाथ हुमनाबादे  
© : संपादक  
**प्रकाशक** : वान्या पब्लिकेशंस  
1A/2122 आवास विकास हंसपुरम्, नौबस्ता,  
कानपुर - 208 021  
Email : vanyapublicationskanpur@gmail.com  
info@vanyapublications.com  
Website : www.vanyapublications.com  
Mob. : 9450889601, 7309038401
- संस्करण** : प्रथम, 2024  
**मूल्य** : 800/-  
**शब्द-सज्जा** : रुद्र ग्राफिक्स, हनुमन्त विहार, नौबस्ता, कानपुर  
**आवरण** : गौरव शुक्ल, कानपुर  
**मुद्रण** : सार्थक प्रिंटर्स, नौबस्ता, कानपुर

31.	प्रेमचंद और भारतीय किसान कॅप्टन प्रो. डॉ. अनिता मधुकरराव शिंदे	174
32.	सोनामाटी : उपन्यास में कृषक जीवन का यथार्थ डॉ. पांडुरंग चिलगर	179
33.	महाकाव्यात्मक उपन्यास 'गोदान' में किसान विमर्श प्रा. विठ्ठल केशव टेकाळे	190
34.	21 वीं सदी के हिंदी उपन्यास और किसान आत्महत्याएँ प्रा. ज्ञानेश्वर विनायक बोडके	195
35.	समकालीन उपन्यासों में कृषक जीवन की व्यथा डॉ. बालाजी विलासराव महाळंकर	200
36.	'हत्या' कहानी में व्यक्त किसान जीवन का संघर्ष डॉ. भगवान रामकिशन कदम	205
37.	किसान विमर्श (पूस की रात के विशेष संदर्भ में) डॉ. बायजा कोटुळे (साळुंके)	210
38.	आर्थिक परिप्रेक्ष्य में प्रेमचन्द की कहानियाँ और किसान डॉ. संजय गणपती भालेराव	213
39.	प्रेमचंद के साहित्य में कृषक चेतना डॉ. संजय गडपायले	220
40.	संत जाम्भोजी की सबदवाणी में अभिव्यक्त किसानी चेतना प्रो. प्रविण देशमुख, वेणू एस. तायडे	225
41.	नागार्जुन के रतिनाथ और बलचनमा उपन्यास में वर्णित किसान विमर्श डॉ. रामकृष्ण बदने	229
42.	'किसानों की शिक्षा' में व्यक्त किसान विमर्श प्रा. माधवराव गजाननराव जोशी	233
43.	'बलचनमा' की प्रासंगिकता डॉ. जितेंद्र शेळके, डॉ. विजयकुमार कल्लूरकर	239
44.	स्वतंत्र्योत्तर कहानियों में किसान जीवन डॉ. श्रीदेवी बाबूराव बिरादार	243
45.	प्रेमचंद और भारतीय किसान शोधछात्र— शेख जाबेर शेख इब्राहिम	247
46.	भारतीय किसान दशा और दिशा का अध्ययन डॉ. छाया एस. तोटवाड	249
47.	प्रेमचंद के उपन्यासों में किसान जीवन शोधछात्र— किर्तीमालिनी हणमंतराव पाटील	253

## किसान विमर्श (पूस की रात के विशेष संदर्भ में)

डॉ. बायजा कोटुळे (साळुंके)

### शोध सार

पूरे विश्व का पालन पोषण जो करता है वह हैं किसानस इसी कारण भारत को कृषिप्रधान देश कहा जाता हैस 70 प्रतिशत से अधिक लोग खेती करते हैंस खेती और किसान का नजदीकी का रिश्ता हैस वह अपनी खेती को सब कुछ मानता हैस किसान लोगों के लिए खेती कोई धंदा नहीं है, बल्कि उनकी जीवन शैली हैस खेती उनके लिए कोई व्यापार भी नहीं है, बल्कि यह तो उसकी रोजमरा की जिंदगी का एक बड़ा हिस्सा हैस किसान अपनी खेती से बहुत लगाव रखता हैस सब कुछ खोंकर भी वह 'किसान' बना रहना चाहता हैस वह दो बीघे खेती का मालिक बना रहना चाहता हैस अगर कोई किसान की खेती को छीनने की कोशिश करता है तो वह उग्र रूप धारण करके आंदोलन के रास्ते पर खड़ा होता हैस हिंदी साहित्य की विभिन्न विधाओं ने किसान की छवियों का प्रमाणिक चित्रण समय-समय पर हुआ है। प्रेमचंद ने अपनी रचनाओं के माध्यम से किसान को एक महत्वपूर्ण स्थान प्रदान किया हैस प्रेमचंद ने किसान जीवन को बहुत नजदीकी से देखा और उसको अपने लेखन का केंद्र बनाया।

**बीज शब्द**— शोषित, आर्थिक विषमता, साहुकारी, माननीय संघर्ष, मजदूरी।

### प्रस्तावना

हमारा देश कृषीप्रधान देश हैस खेती प्राचीन काल से अर्थव्यवस्था का आधार रही हैस इसके प्रमाण हमें वेदों में मिलते हैस तब से लेकर आज आधुनिक, औद्योगिक सम्यता में भी खेती किसानों का एक बड़ा व्यवसाय है, और आगे भी रहेगास भारत के आत्मा में बसने वाले इन किसानों का जीवन हमेशा से भुखा रहता दिखाई देता हैस क्योंकि प्रकृती कभी किसानों का साथ नहीं देती सकभी सुखा अकाल, तो कभी गिला अकाल के कारण किसानों की दयनीय स्थिती हो जाती है जिसके कारण किसान को मौत के गले लगाना पडता है।

आज किसान साहित्यकारों, कलाकारों और बुद्धिजीवियों के अध्ययन, विश्लेषण, विवेचन का विषय हो रहा है। साथी वह शोध का विषय भी बन रहा

जलाकर तापने की कोशिश की आग से मन और शरीर को सुकून देने वाली गरमाहट अच्छी लगी और अलाव के पास सोता रहा सउधर निलगायों ने फसल खत्म कर दीस जबरा कुत्ता रातभर भौं-भौं कर निलगायों को भगाने की चेष्टा करता रहास फिर भी निलगायों ने पूरी खड़ी फसल खत्म कर दी थी। भौंकते-भौंकते जबरा सुबह तक बेहोश हो गया था। सुबह हल्कू की पत्नी खेत में आई तो पता चला सारा खेत चौपट हो गया थास हल्कू ने उठकर कहा, "क्या तू खेत से होकर आ रही है ?" मुन्नी ने कहा, "हाँ, सारे खेत का सत्यानाश हो गयास भला ऐसा भी कोई सोता है! खेती को देखकर मुन्नी कहती है कि 'आप जी तोड मजदूरी कर मालगुजारी भरणी पड़ेगीस' तब हल्कू कहता है कि 'फसल तो चौपट हो गयी अब जाडे की रात में सोना तो नहीं पड़ेगा।' वास्तव में किसानों के जीवन का वर्णन इतना सच्चा, मर्मरपर्शी, जिवंत और मार्मिक तरीके से प्रेमचंद ने किया है जो किसान के हृदय विदारख पहलू को जिवंतता के साथ उजागर कर के किसान के हृदय की वेदना को शब्दबद्ध किया है।

### निष्कर्ष

निष्कर्ष के रूप में हम कह सकते हैं कि प्रेमचंद ने कहानी के माध्यम से भारतीय किसान जो मौसम की कठोरता से, आर्थिक चुनौतियों से, किस तरह जूझ रहा हैस ऐसा कहा जाता है कि किसानों की उन्नती से ही देश की उन्नती संभव हैस जिस तरह हल्कू की दुर्दशा है, उसी प्रकार आज भी आजादी के 75 साल के बाद भी किसानों की 'हीन' दशा है। भारतीय समाज में राजनीति, पुंजीपती, अधिकारी, साहुकारी, पटवारी, शासन सत्ता के आखरी निशाना भारतीय किसान बनता है। यही यथार्थ इस कहानी से सामने आता है।

### संदर्भ

- 1) कथा द्वादशी -सं. हिंदी अध्ययन मंडळ, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली पृष्ठ 26
- 2) वही, -पृष्ठ 26
- 3) वही, -पृष्ठ 26
- 4) वर्तमान साहित्य -अक्टूबर 2013, पृष्ठ 95
- 5) कथा द्वादशी - सं. हिंदी अध्ययन मंडळ, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ 29
- 6) वही, पृष्ठ 39

हिंदी विभाग प्रमुख,  
वसुंधरा महाविद्यालय, घाटनांदुर  
E-mail : drbmkotule@gmail.com

हैस हिंदी साहित्य में विविध विधाओं में किसान को लेकर चित्रण हो रहा हैस किसान के जीवन पर अत्यंत आस्था और करुणा के साथ गंभीरता से लिखने वाले हिंदी साहित्य के प्रसिद्ध लेखक मुंशी प्रेमचंदजी है। यह पहले लेखक है, जिन्होंने किसानों को केंद्र में रखकर साहित्य की रचना की हैस प्रेमचंद ने पहली बार किसानों के जीवन को भीतर से देखा और उनकी पीड़ा को उनकी गरीबी, उनके सीधेपण, चतुराई, उनके हास्य-रुंदन को अपने साहित्य में सजीव ढंग से चित्रित किया है तभी तो उन्होंने हल्कू को व्यक्ती चरित्र से 'वर्ग चरित्र' बना दिया है।

पूस की रात यह कहानी प्रेमचंद बीसवी सदी के प्रारंभ में लिखी थी। हल्कू जो कहानी का नायक है वह पूरे भारत के किसान का प्रतिनिधित्व करता है। हल्कू और उसकी पत्नी मुन्नीने तीन रुपये कंबल लेने के लिए जोड़े रखे थे। एक दिन अचानक सहना घर आया जिसे बाकी देना था। हल्कू ने पत्नी से कह- "सहना आया है, लाओ, जो रुपये रखे हैं, उसे दे दूँ, किसी तरह गला तो छूटेस" वह किसान जो पुरे समाज की आवश्यकता को पूरा करने के लिए मेहनत करता हैस लेकिन व खुद कितने कष्टों में रहता है। मुन्नीने रुपये देने से मना कर दियास वह कहती है- "तीन ही तो रुपये हैं, दे दोगें तो कंबल कहाँ से आयेगा? माघ-पूस की रात हार में कैसे कटेगी।" इस तरह आर्थिक विषमता, किसान-मजदूरों खस्ता हालात को प्रेमचंद कहानी के माध्यम से प्रस्तुत करते है। आर्थिक स्थिती का सामना करता हुआ किसान हालात के आगे मजबूर है। खेतों में आये दिन मजदूरी करना और रात के समय जंगली जानवरों से फसल की रक्षा करना, अपनी जान को दाँव पर लगाकर मालिक की सेवा करना आदि बातों को लेकर लिखी यह कहानी आज भी प्रासंगिक है।

मुन्नी हल्कू से कहती है, "न जाने कितनी बाकी है जो किसी तरह चुकने ही नहीं आतीस मैं कहती हूँ, तुम क्यों नहीं खेती छोड देते? मर- मर काम करो, उपज हो तो बाकी दे दो चलो छुट्टी हुईस बाकी चुकाने के लिए ही तो हमारा जन्म हुआ है।" स्पष्ट है की हमारे किसानों की स्थिती मजदूरों से भी बेकार है। प्रेमचंद ने कहा है, "पूँजीपतियों के हाथों मे किसानों और मजदूरों की किरमत रहेगी।" ऐंसा लगता है कि मेहनत किसान करे और उसका मजा कोई और उठाये।

इस साल हल्कू ने मेहनत-मजदूरी करके तीन रुपये कंबल खरीदने के लिए जोड रखे थे। परंतु साहूकार से पीछा छुड़ाने के लिए वह तीन रुपये देकर उसने ब्याज चुकायास कंबल खरीदना उसके नसीब में नहीं रहा सउसके जाडे की रात में हल्कू खेत की रखवाली करता हैस जाडा इतना जानलेवा है कि, थमने का नाम ही नहीं लेतास उसके साथ खेती की रखवाली करने के लिए जबरा नामक कुत्ता भी है जिसके साथ हल्कू दोस्ताना व्यवहार करता है। हल्कू ने ये कहा, "क्यों, जबरा जाडा लगता है? कहता तो था घर में पुआल पर लेट रह, तो यहाँ क्या लेने आये थेसअब खाओ ठण्ड, मैं क्या करूँ?" ठण्ड से बचने के लिए आग

# हिंदी यात्रावृत्तांत साहित्य



डॉ० ओकेन्द्र





जे.टी.एस. पब्लिकेशन्स, दिल्ली

हिंदी यात्रावृत्तांत साहित्य

सम्पादक

डॉ० ओकेन्द्र

वैधानिक चेतावनी

पुस्तक के किसी भी अंश के प्रकाशन- फोटोकॉपी, इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों में उपयोग के लिए लेखक/ संपादक/ प्रकाशक की लिखित अनुमति आवश्यक है। पुस्तक में प्रकाशित शोध-पत्रों में निहित विचार तथा संदर्भों का संपूर्ण दायित्व स्वयं लेखकों का है। संपादक/ प्रकाशक इसके लिए उत्तरदायी नहीं है।

© सर्वाधिकार सुरक्षित

प्रथम संस्करण : २०२४

ISBN 978-81-969338-9-0

प्रकाशक

जे०टी०एस० पब्लिकेशन्स

वी-५०८, गली नं०१७, विजय पार्क, दिल्ली-११००५३

दूरभाष : ०८५२७ ४६०२५२, ०११-२२६११२२३

E-Mail : jtspublications@gmail.com

मूल्य : १२०० रूपये

ब्रांच ऑफिस: ए-९, नवीन इनक्लेव गाज़ियाबाद,  
उत्तर प्रदेश, पिन-२०११०२

आवरण : प्रतिभा शर्मा, दिल्ली

मुद्रक : तरुण ऑफसेट प्रिंटेर्स, दिल्ली

Hindi Yatravritant Sahitya

Edited by Dr. Okendra,

## अनुक्रमणिका

## भूमिका

- |   |         |
|---|---------|
| १. हिन्दी साहित्य की प्रमुख विधा है यात्रावृत्तान्त<br>डॉ० बेद प्रकाश तिवारी                                  | ५<br>१६ |
| २. यात्रा साहित्य की अवधारणा<br>सरस्वती राजेंद्र पवार   | २६      |
| ३. निर्मल वर्मा का 'यात्रावृत्तांत' : यात्राओं और अस्तित्व की खोज में<br>साहित्यिक अन्वेषण<br>डॉ० नेहा प्रधान | ३३      |
| ४. भारत में यात्रावृत्तांत का उपयोग<br>डॉ० राजेश मौर्य  | ४३      |
| ५. यात्रावृत्तांत साहित्य की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि का स्वरूप एवं महत्व<br>डॉ० (सुश्री) राणी बापू लोखंडे        | ५७      |
| ६. परम पावन पापनाशिनी धर्म नगरी वृन्दावन की यात्रा<br>डॉ० राजेश, डॉ० आशा कुमारी                               | ६६      |
| ७. यात्रा पुरी<br>डॉ० रोशनी मिश्रा  | १०८     |
| ८. पिथौरागढ़ का अन्तिम गाँव नामिक की यात्रा का यात्रावृत्तांत<br>नरेश चन्द्र आर्या                            | ११४     |
| ९. गोविंद मिश्र का यात्रा साहित्य<br>प्रा० डॉ० बायजा कोटुळे (साळुंके)   | १२०     |
| १०. यात्रा वृत्तांत : हरियाणा से हरि के द्वार तक<br>डॉ० श्रीलेखा चौबे   | १२६     |
| ११. नेपाल की यात्रा का वृत्तांत : सयौं तूंगा फूलका<br>डॉ० रतिका पंचारपोईल कोट्टायी                            | १३६     |
| १२. नोरा रिचर्डस के 'चमेली हाउस' की सैर का यात्रा वृत्तांत<br>डॉ० नीतू रानी                                   | १४५     |

9  
गोविंद मिश्र का यात्रा साहित्य

प्रा.डॉ. बायजा कोदुळे (साळुंके)

यात्रा करना व्यक्ति की नैसर्गिक प्रवृत्ति रही है। अनादिकाल से व्यक्ति यात्राएँ करते आ रहा है। अपने जीवनकाल में हर व्यक्ति कभी-न-कभी, कोई-न-कोई यात्रा अवश्य करता है लेकिन सृजनात्मक प्रतिभा के धनी अपने यात्रा अनुभवों को पाठकों के सम्मुख प्रस्तुत कर यात्रा साहित्य की रचना करने में सफल होते हैं। यात्रा का उद्देश्य व्यक्ति का कौतुहल, जिज्ञासा और अज्ञान को जानने की गहरी इच्छा के कारण निर्माण होती है। यात्रा व्यक्ति को समृद्ध करती है। नवीनता की अनुभूति होती है, विश्व की बहुत सी भौगोलिक शिक्षाप्रद और ऐतिहासिक जानकारीयों यात्रा साहित्य की उपलब्धि है।

यात्रा वर्णन में स्थान विशेषता, आँचलिकता, कलात्मकता, ऐतिहासिकता, साहित्यिकता, परिलक्षित होती है। व्यक्ति अपने व्यस्तताओं से मुक्त होने के लिए एक स्थान से दुसरे स्थान की यात्रा करता रहा है। इस संदर्भ में ओमप्रकाश सिंहल कहते हैं, "देश-विदेश के विभिन्न स्थानों की यात्रा से हमें न केवल अनुभूति, वस्तुओं, दृश्यों एवं पदार्थों का ज्ञान प्राप्त होता है, अपितु ऐसे कटू-मधुर अनुभव भी प्राप्त होते हैं, जो हमारी जीवन दृष्टि को व्यापकता प्रदान करते हैं।" स्पष्ट है की, यात्रा-वर्णन व्यक्ति को व्यापक दृष्टि प्रदान करता है।

हिन्दी विभाग प्रमुख, वसुंधरा महाविद्यालय, घाटनांदूर, त.अंबाजोगाई, जि.बीड.  
(महाराष्ट्र)

मोहजाल में फँसे विदेशी शक्तियों का विचार करने को प्रेरित करता है।

पाश्चात्य सभ्यता एवं लोक-संस्कृति में हो रहा मानवीय मूल्यों का अधःपतन, विघटन तथा अवमूल्यन धुधभरी सुखी वाज्य वर्णन में स्पष्ट झालकता है। इसमें दिल्ली के हवाई अड्डे पानम से लेकर, तेहरान होते हुए लंदन के हीथरो हवाई अड्डे तक की यात्रा और बीच के प्राकृतिक वर्णन मर्मस्पर्शी हुआ है। लंदन के स्थलों का आँखों देखा वर्णन वेल्स, फ्रान्स, जर्मनी की रेल, बस तथा जहाज द्वारा की गई यात्रा का वर्णन भी किया है। इसी कारण ही वे किसी भी स्थान को अपने तरीके से जानते पहचानते हैं। वे कहते हैं, "हिंदुस्थानी शायद गरीब ही रहता है... यहाँ आकर और भी गरीब हो जाता है, वह चाहे मैं होऊ या पढ़ने के लिए आया हुआ कोई नौजवान।... मैं यह सब तोड़ना चाहता हूँ... किसी भी नई जगह के देखने के तरीके हो सकते हैं।... मुझे अपने ही ढंग से इंग्लैंड को ढूँढना है।..... यह भी जानता हूँ कि बहुत ही योजनाबद्ध तरीके से लचने पर मैं सिर्फ इंग्लैंड की बड़ी-बड़ी चीजों को देखकर लौट जाऊँगा इस देश की आत्मा में नहीं बैठ पाऊँगा।"<sup>3</sup> यहाँ लेखक के मन की ललक प्रस्तुत हुई दिखाई देती है। स्पष्ट है कि, इस यात्रा वर्णन में उन्होंने स्वदेशी और विदेशी दो संस्कृतियों और संस्कारों का तुलनात्मक अनुशीलन किया है। इसमें व्यक्ति, समाज, स्थान विशेष और परिवेश का चित्रण भी हुआ है।

दरख्तों के पार....शाम यह इनका गोविंद मिश्र का दुसरा यात्रा-वर्णन है। इसमें जर्मनी, हंगरी, फ्रौकफर्ट, बर्लिन, चेकोस्लोवाकिया, म्यूनिख, बियान, प्रादा आदि जैशे देशों की तीन

की टिप्पणी है। लेखक ने इसमें यूरोपीय देशों के उत्तम वर्णन किया है जो दरख्तों... के पार है।

झूलती जड़े यह उनका तीसरा यात्रा-वर्णन है। भारत के विभिन्न अंचलों में की गई यात्रा है जिसमें कुल यात्रा लेख संकलित है। प्रस्तुत यात्रा-वर्णन में मध्य प्रदेश के जंगल में रहने वाले बस्तर आदिवासी जन-जीवन की संस्कृति का वर्णन किया है। साथ ही अंदमान-निकोबार प्रकृति और काले पानी का इतिहास भी प्रस्तुत है। भारत राजस्थान, पंचमढ़ी, केरल, आसाम जैसे सुदुर दुर्गम भागों का यायावरी जीवन चिंतन का भी वर्णन अभिव्यक्त किया है। गोविंद मिश्र यात्रा के द्वारा प्रकृति सौंदर्य, पुराण संस्कृति, लोक जीवन, लोक कलाएँ और इतिहास को जानना चाहते हैं।

परतों के बीच यह गोविंद मिश्र का चौथा यात्रा वर्णन है। यह यात्रा वर्णन स्वदेशी और विदेशी लोक संस्कृति को उजागर करता है। इसमें अच्युतम राजा की न्याय-व्यवस्था, विजयनगर के राजा की सुरक्षा व्यवस्था, गुजरात राज्य में मकर संस्कृति, सूरत में होने वाले पतंग पर्व का सामूहिक जश्न, आसाम में अहंकारी राजा की डर से उस समाज में लड़कियों को बदसुरत करने की प्रथा, बालविवाह पद्धति, प्राचीन वास्तुकला में होने वाला हिन्दु-मुस्लिम समन्वय विदेशी लोगों की उदारनीति साहित्य तथा साहित्यकारों के प्रति होने वाली आत्मीयता, प्रेमभावना सहानुभूति, शांति, उत्सुकता, युवापिढी का संगीत नृत्य, सेक्स का माहोल आदि का सुक्ष्म निरीक्षण करके वर्णन किया है। डॉ. प्रकाश मोकाशी के शब्दों में, "तीन परतों के बीच हमपी, भारत का पश्चिमी कोना गुजरात शहर छातों पर वे यहाँ है, लुप्त होने वाली नदियाँ, अरुणाचल प्रदेश रवि

से मुलाकात, इन्द्रधनुषों का देश, मॉरिशस एक यात्रा ऊबड़-खाबड़ रशा-रेड नहीं हल्दिया आदि यात्राओं को बहुत ही सुंदरता से चित्रित किया है, जिनसे सही जानकारी प्राप्त होने में मदद होती है।<sup>15</sup>

निष्कर्ष : निष्कर्षतः हम कहते हैं कि गोविंद मिश्र प्रतिभाशाली, संवेदनशील, घुमक्कड़, व्यवहार-कुशल तथा निडर आदि गुणों से युक्त है। गोविंद मिश्र ने यात्रा-वर्णन में छोटी-छोटी कथाओं की रोचकता दिखाई देती है। साथ ही मानवीय मूल्यों के प्रति, गहरी आस्था भी है और आचरण की पवित्रता, सहिष्णुता, नैतिक मनोबल, न्यायप्रियता, क्षमाशिलता, सुसंस्कृतता, भावात्मकता, प्रेम-भावना, सहानुभूति, आत्मनिर्भरता, सम्मान, स्नेह, संस्कार आदि तत्व दिखाई देते हैं। साथ ही स्थान विशेषता, ऐतिहासिकता, कलात्मकता, साहित्यिकता, आँचलिकता आदि विशेषताएँ पाठक को यात्रा करने के लिए प्रेरित करती है और दिशा निर्देश भी देती है।

संदर्भ संकेत :

१. डॉ.ओमप्रकाश सिंहल - समकालीन हिन्दी यात्रा-वृत्त के प्रमान पृष्ठ. 165
२. सं.वि.सा.विद्यालंकार - मार्च. 1981 पृष्ठ. 40
३. गोविंद मिश्र - धुंधभरी सुर्खी, पृष्ठ. 13
४. गोविंद मिश्र - दरख्तों के पार.....शाम, पृष्ठ. 06
५. डॉ.प्रकाश मोकाशी - यात्रा साहित्य : परिवेश एवं परिप्रेक्ष्य पृष्ठ. 240



75  
Azadi Ka  
Amrit Mahotsav



# स्वातंत्र्योत्तर भारत : आर्थिक आणि सामाजिक विकास



संपादक : डॉ. विलास खंदारे

## अनुक्रमणिका

अ.क्र.	विवरण	पृ.क्र.
1	ग्रामीण-नागरी स्थलांतर संकल्पना आणि कारणीभूत घटक प्रा. डॉ. दत्तात्रय प्रभुराव मुंडे.....	9
2	भारतीय राजकारणात सोशल मिडीयाची भूमिका डॉ. बंडू थावरा पवार.....	13
3	जनतेच्या मनातील अर्थसंकल्प 2023 - 24 प्रा. डॉ. शिवाजी यादव.....	17
4	भारतीय अर्थव्यवस्थेतील बँकिंग क्षेत्राची भूमिका डॉ. पी. एस. मिसाळ, डॉ. डी. बी. खरात.....	22
5	महाराष्ट्राच्या कृषी विकासात आधुनिक सिंचन पध्दतीचा सहभाग प्रा.श्रीमंत तुकाराम कावळे, प्राचार्य डी.पी.टकले.....	26
6	भारताच्या लोकसंख्या विषयक धोरणाचा अभ्यास प्रा. डॉ. संजय आनंदा डापके.....	30
7	निवडणुकीचे राजकारण आणि प्रसिद्धी माध्यम डॉ.गोंदकर तुकाराम दत्तात्रय.....	33
8	समाज माध्यम प्रभावित राजकारण प्रा. डॉ. कदम एच. पी.....	37
9	नवीन राष्ट्रीय शैक्षणिक धोरण समोरील आव्हाने प्रा.डॉ.मोरे अर्जुन मोहनराव.....	41
10	भारतातील पर्यटन विकास: एक अभ्यास डॉ. हिवाळे मधुकर लक्ष्मण.....	45
11	भारतीय अर्थव्यवस्थेत कृषि क्षेत्राचे महत्व प्राध्यापक. डॉ. शंकर अंभोरे, डॉ. सय्यद अब्दुल अजीज महेबूबासाब.....	49
12	भारतीय कृषी क्षेत्र :आव्हाने आणि पर्याय प्रा. डॉ. दीपक एम . भारती, गोविंद रामराव काळे.....	55
13	समान नागरी कायदा संविधान सभेतील अपूर्ण प्रक्रिया:एक मीमांसा एकनाथ ज्ञानदेव खरात.....	58
14	हवामान बदलाचा कृषीक्षेत्रावर झालेला परिणाम प्रा.डॉ.एन.एस.गेडाम.....	62
15	नवे शैक्षणिक धोरण टप्पे आणि आव्हाने डॉ. बालाजी शिवाजी राजोळे.....	66



## नवीन राष्ट्रीय शैक्षणिक धोरण समोरील आव्हाने

**प्रा.डॉ. मोरे अर्जुन मोहनराव**

- अर्थशास्त्र विभाग प्रमुख, वसुंधरा महाविद्यालय, घाटनांदूर  
ता. अंबाजोगाई जि. बीड

मानवाच्या ज्ञान प्राप्ती आणि ज्ञानवृद्धीगत करण्याचा प्रमुख घटक शिक्षण आहे. शिक्षणाद्वारे मानवाला सत्य-असत्य, योग्य-अयोग्य या संबंधीचे ज्ञान प्राप्त होवुन कर्तव्य आणि कार्य याची जाणीव होते. ज्या देशात शैक्षणिक विकास घडून आला आहे. त्या देशाची तांत्रिक, व्यावसायिक, औद्योगिक, आर्थिक, भौतिक, सामाजिक प्रगती घडून येते. या दृष्टीकोनातून स्वातंत्र्योत्तर काळात स्थळ, काळ आणि परिस्थितीला अनुसरुन भारत सरकारने शिक्षणासंबंधी नवनवीन धोरण आखण्यावर भर दिला आहे. भारत सरकारने शैक्षणिक धोरण आखण्याकरिता सातत्याने शैक्षणिक आयोगांची आणि समित्यांची स्थापना केली आहे. या शैक्षणिक आयोगाने आणि समित्यांनी केलेल्या सुचना आणि शिफारशी अंमलात आणल्या आहेत. यामध्ये डॉ. कोठारी आयोगाने तयार केलेले शैक्षणिक धोरण २९ जून १९६६ ते १९८६ पर्यंत प्रभावीपणे स्विकारले. परंतु बदलत्या परिस्थितीला अनुसरुन १९८६ मध्ये नवीन शैक्षणिक धोरण तयार केले. त्यानंतर ३४ वर्षाने म्हणजेच २९ जुलै २०२० रोजी केंद्रीय मंत्रिमंडळाच्या बैठकीत नवीन राष्ट्रीय शैक्षणिक धोरणाला मंजूरी दिली. हे नवीन राष्ट्रीय शैक्षणिक धोरण जेष्ठ वैज्ञानिक डी.के. कस्तुरीनंदन यांच्या अध्यक्षतेखाली तयार करण्यात आले आहे.

नवीन राष्ट्रीय शैक्षणिक धोरणाचे उद्दिष्ट्ये अध्यापन, अध्ययन शिक्षण यांची गुणवत्ता वाढविणे. विद्यार्थ्यांच्या सर्वांगीण विकासाला चालना देणे. गतीमान व परिवर्तनशिल जगात विद्यार्थी यशस्वी होण्यासाठी त्यांना आवश्यक ते ज्ञान आणि कौशल्य प्रदान करणे. या करीता व्यावसायिक शिक्षणावर भर देणे. शिक्षकांच्या प्रशिक्षणावर भर देणे अध्ययन, अध्यापन यामध्ये तंत्रज्ञानाचा वापर करणे. या सर्व उद्दिष्टांना अनुसरुन नवीन राष्ट्रीय शैक्षणिक धोरणाला (NEP२०२०) ही संज्ञा दिली आहे. या शैक्षणिक

धोरणाचा आकृतीबद्ध (5+3+3+4) आहे. या शैक्षणिक धोरणात अधिक शैक्षणिक लवचिकचा विद्यार्थ्यांना आवडीप्रमाणे विषय निवड, समग्र आणि बहुविद्याशास्त्रीय शिक्षण, सर्वसमावेशक शिक्षण, बहुभाषिकतेला प्रोत्साहन, शिक्षणात तंत्रज्ञानाचा अधिक वापर, व्यावसायिक उपक्रम, संशोधन आणि नवोपक्रम इत्यादीवर भर देण्यात आला आहे.

नवीन राष्ट्रीय शैक्षणिक धोरणाचे उद्दिष्ट्ये आणि स्वरूप राष्ट्र, समाज आणि मानव यांच्या प्रगतीच्या दृष्टीने उतुंग असले तरी हे शैक्षणिक धोरण राबविण्यामध्ये शासन, शैक्षणिक संस्था, शिक्षक यांच्या समोर मोठ्या प्रमाणात आव्हाने उभी राहणार आहेत. या आव्हानाचे अध्ययन करण्याकरिता पुढीलप्रमाणे अध्ययनाची उद्दिष्ट्ये मांडण्यात आली.

**अध्ययनाची उद्दिष्टे :**

- १) नवीन राष्ट्रीय शैक्षणिक धोरणाचे स्वरूप अभ्यासणे.
- २) नवीन राष्ट्रीय शैक्षणिक धोरणाची व्याप्ती आणि वैशिष्ट्ये अभ्यासणे.
- ३) नवीन राष्ट्रीय शैक्षणिक धोरण राबविण्यासंबंधी येणाऱ्या आव्हानांचे अध्ययन करणे.

सदरील उद्दिष्टांच्या पूर्ततेकरीता पुढीलप्रमाणे गृहितकांची मांडणी करण्यात आली.

**गृहितके :**

- १) नवीन राष्ट्रीय धोरणाचे स्वरूप, उद्दिष्ट्ये आणि व्याप्ती राष्ट्रीय व सामाजिक प्रगतीचे सुचक आहे.
- २) नवीन राष्ट्रीय शैक्षणिक धोरणाचा दृष्टीकोन तंत्रज्ञानाचा वापर आणि प्रशिक्षणाशी निगडित आहे.
- ३) नवीन राष्ट्रीय शैक्षणिक धोरण राबविण्यात अनेक आव्हाने आहेत.

सदरील गृहितकांच्या पडताळणी करिता पुढीलप्रमाणे संशोधन पध्दतीचा अवलंब करण्यात आला आहे.

**संशोधन पध्दती :**

प्रस्तुत शोध निबंधाच्या मांडणीकरिता वर्णनात्मक संशोधन पध्दतीचा अवलंब करण्यात आला आहे. तर शोधनिबंधाच्या तथ्य संकलनाकरिता प्रामुख्याने द्वितीयक स्रोतातील प्रकाशित व अप्रकाशित स्रोतांचा वापर करण्यात आला. प्रकाशित स्रोतांमध्ये शासनाचे प्रकाशित अहवाल, मासिके, वर्तमानपत्रे, शासकीय व निम्नशासकीय संस्थांचे अहवाल इत्यादीचा अवलंब करण्यात आला. अप्रकाशित स्रोतांमध्ये एम.फिल, पीएच.डी चे प्रबंध, खाजगी संस्थांचे अहवाल, इंटरनेट इत्यादीचा वापर करण्यात आला.

**विषय प्रतिपादन :**

नवीन राष्ट्रीय शैक्षणिक धोरण NEP 2020 हे केंद्र सरकारने ज्येष्ठ वैज्ञानिक डी.के. कस्तुरीवंद यांच्या अध्यक्षतेखाली तयार करण्यात आले. या शैक्षणिक धोरणाचा आकृतीबंध (5+3+3+4) या स्वरूपात आहे. या शैक्षणिक धोरणात सर्वसमावेशक शिक्षण, शिक्षकांना प्रशिक्षण, शिक्षणात तंत्रज्ञानाचा वापर इत्यादी घटकांना प्राधान्य देण्यात आले आहे.

**नवीन शैक्षणिक धोरणाचे उद्दिष्टे :**

**१) समग्र आणि बहुविद्याशाखीय शिक्षण :**

नवीन शैक्षणिक धोरण विद्यार्थ्यांचा सर्वांगीन विकास आणि त्यांना बहुविद्या शासकीय शिक्षण देणे. विद्यार्थ्यांना शिक्षण देत असताना पाठ्यपुस्तकीय शिक्षणाच्या पलीकडे जावून त्यांचा संज्ञात्मक सामाजिक बौद्धिक, मानसिक, भावनीक आणि शारीरिक विकास करणे. तसेच विद्यार्थ्यांना वेगवेगळ्या विद्याशाखेतील विषय निवडीची परवानगी देणे.

**२) अभ्यासक्रम निवडीतील लवचिकता :**

नवीन शैक्षणिक धोरण लवचिक अभ्यासक्रम प्रदान करते. तसेच विद्यार्थ्यांना त्यांच्या आवडीनुसार अभ्यासक्रम निवडण्याची परवानगी देणे. विद्यार्थ्यांना त्यांच्या गतीने शिकण्यास सक्षम करणे.

**३) तंत्रज्ञानाचा अवलंब :**

नवीन शैक्षणिक धोरण बदलत्या परिस्थितीला अनुसरून शिक्षण व शैक्षणिक प्रशासन यामध्ये तंत्रज्ञानाचा समर्थपणे अवलंब करण्यावर भर देते.

त्यामध्ये ऑनलाईन अध्यापन-अध्ययन पध्दती, इंटरनेट, प्रोजेक्टर, संगणक इत्यादी.

**४) सार्वत्रिक प्रवेश आणि समानता :**

नवीन शैक्षणिक धोरण सामाजिक, आर्थिक पार्श्वभूमी किंवा भौगोलिक स्थानाची पर्वा न करता सर्वांसाठी शिक्षणाचा सार्वत्रिक प्रवेश सुनिश्चित करते. तसेच शिक्षणातील लिंग आणि सामाजिक अंतर भरून काढण्याचे उद्दिष्टे आहे.

**५) गुणवत्ता आणि उत्तरदायित्व :**

नवीन राष्ट्रीय शैक्षणिक धोरण शिक्षणातील गुणवत्ता वाढीवर भर देते. या गुणवत्तेमध्ये शिक्षकांना प्रशिक्षण देणे, विद्यार्थ्यांना कला कौशल्यांमध्ये पारंगत करणे. तसेच शिक्षणात पुराव्यासह प्रत्यक्ष माहिती उपलब्ध करून देणे.

**६) शिक्षक व्यावसायिक विकास :**

नवीन शैक्षणिक धोरण शिक्षकांना महत्वपूर्ण घटक मानून त्यांच्या प्रशिक्षणावर भर देते. शिक्षकांना व्यावसायिक प्रशिक्षण देवून त्यांच्याद्वारे विद्यार्थ्यांना व्यावसायिक, औद्योगिक शिक्षण देण्यावर भर देते.

**७) संशोधन आणि नवोपक्रम :**

नवीन शैक्षणिक धोरण शिक्षणात संशोधनाला चालना देण्यावर भर देते. त्याकरिता संशोधन प्रतिष्ठान NEP 2020 ची स्थापना करण्यासह शिक्षणात संशोधन आणि नवोपक्रम यांच्या नावीन्य पूर्णतेवर भर देते.

एकंदरीत NEP 2020 चे शैक्षणिक धोरण सर्वांसाठी सर्व विद्याशाखे मध्ये खुला प्रवेश देते. सर्व घटकातील अध्ययना करिता शिक्षणात लवचिकता वाढवते. शिक्षण प्रभावी, गुणात्मक वैशिष्ट्यपूर्ण व्हावे याकरिता तंत्रज्ञानाच्या वापरावर भर देते. शिक्षणासबंधी विशाल स्वरूपाचा दृष्टीकोन निर्माण व्हावा. तांत्रिक व व्यावसायिक शिक्षणाला चालना मिळावी या करिता प्रत्याक्षिक व संशोधन यावर भर देते. शिक्षणात गुणवत्ता, उत्तरदायित्व आणि संशोधन याला महत्व देते. तसेच सर्व विद्यार्थ्यांना उच्च गुणवत्तेच्या शिक्षणाची उपलब्धता सुनिश्चित करण्यासाठी व्यावसायिक व तांत्रिक शिक्षणासंबंधी आवश्यकता घटकावर भर देते.

NEP 2020च्या शैक्षणिक धोरणाचे उद्दिष्टे आणि स्वरूप वैशिष्ट्ये पूर्ण व विशाल स्वरूपाचे असले तरी हे शैक्षणिक धोरण राबविताना शासन, प्रशासन,

शिक्षक विद्यार्थी यांना अनेक आव्हानांना समोरे जावे लागणार आहे. ती पुढीलप्रमाणे

नवीन शैक्षणिक धोरणा समोरील आव्हाने :

१) विस्तृत बदलाचे आव्हान :

नवीन शैक्षणिक धोरण हे अंगणवाडी ते उच्चशिक्षण आणि वेगवेगळे व्यावसायिक डिप्लोमे इत्यादी घटकांशी संबंधित आहे. या सर्व घटकांचा नवीन अभ्यासक्रम तयार करणे. अभ्यासक्रमाला अनुसार तांत्रिक सुविधा निर्माण करणे हे आव्हान होणार आहे.

२) तांत्रिक सुविधा निर्मितीचे आव्हान :

नवीन शैक्षणिक धोरणात ऑनलाईन क्लास, इंटरनेटचा वापर, ई-लर्निंग सुविधा, डिजिटल क्लासरूम, कौशल्य ऑनलाईन अध्यापन मॉडेल शारीरिक शिक्षण आणि प्रयोगशाळा ह्या सर्व सुविधा शिक्षण संस्थाना उपलब्ध करणे व त्या सुविधा राबविणे आव्हान ठरणार आहे.

३) शिक्षण संस्थांना गतीशिल आणि आर्थिक गुंतवणूकीकरिता प्रेरित करणे :

नवीन शैक्षणिक धोरण २०२४ मध्ये लागू होत आहे. त्यामुळे शैक्षणिक संस्थांना गतीने शैक्षणिक सुविधा करणे आवश्यक आहे. या शैक्षणिक सुविधा निर्माण करण्याकरिता खर्च करण्यास प्रेरित करणे आव्हान ठरणार आहे.

४) शासना समोर आर्थिक गुंतवणूकीचे आव्हान :

डॉ.कोठारी आयोगाने १९६५ मध्ये राष्ट्रीय उत्पन्नाच्या सहा टक्का<sup>१</sup> खर्च शिक्षणावर करावा असे सुचविले होते. मात्र प्रत्यक्षात शासनाने तीन टक्क्या पेक्षा जास्त खर्च शिक्षणावर केला नाही. नवीन शैक्षणिक धोरण पूर्णतः तांत्रिक सुविधा, प्रशिक्षण, संशोधन आणि प्रात्यक्षिक स्वरूपाचे आहे. या सर्व सुविधांच्या उपलब्धीकरिता मोठ्या प्रमाणात शासनाला खर्चाची तरतुद करणे आव्हान ठरणार आहे.

५) ऑनलाईन शिक्षण व तांत्रिक सुविधांचे आव्हान :

नवीन शैक्षणिक धोरणामध्ये ऑनलाईन शिक्षणावर भर देण्यात आला आहे. मात्र आज ही काही राज्यातील गावे, खेडी, दुर्गम भागातील वस्त्या येथे विद्युतीकरण झालेले नाही. तेथे रस्त्याची व दळण-वळवणाची सुविधा नाही. इंटरनेटची सुविधा नाही. त्यामुळे तेथे ऑनलाईन शिक्षण राबविणे,

शैक्षणिक सुविधा पुरविणे हे आव्हान उभे राहणार आहे.

६) प्रशिक्षण व मार्गदर्शनाचे आव्हान :

नवीन शैक्षणिक धोरणा संबंधी शिक्षक, प्राध्यापक, विद्यार्थी यांना प्रशिक्षण आणि मार्गदर्शक यांची आवश्यकता आहे. भारतात प्राथमिक, माध्यमिक, उच्च माध्यमिक शाळांची संख्या १५ लाख आहे. त्यामध्ये २५ कोटी विद्यार्थी व ८९ लाख शिक्षक आहेत. तर उच्च शिक्षणाकरिता ७०० विद्यापीठे त्यात ४० हजार महाविद्यालय पावने चार कोटी विद्यार्थी आणि प्राध्यापक आहेत. या सर्व विद्यार्थी, शिक्षक, प्राध्यापक यांना प्रशिक्षण व मार्गदर्शनाचे आव्हान निर्माण होणार आहे.

७) बहुभाषीक ज्ञानाचे आव्हान :

नवीन शैक्षणिक धोरणात सार्वत्रिक एकच अभ्यासक्रम, विषय निवडीत लवचिकता, बहुविद्याशाखीय शिक्षण निश्चित करण्यात आले आहे. परंतु प्रत्येक जात, धर्म, प्रदेश, समाज, समुदाय यांची बोलीभाषा भिन्न स्वरूपाची आहे. तसेच प्रमाण भाषा मध्ये ही भिन्नता आहे. त्यामुळे सर्वच घटकातील विद्यार्थी, शिक्षक यांना एकच प्रमाणभाषेतील अभ्यासक्रम तयार करणे, अध्ययन, अध्यापन, लिखन करणे इत्यादी प्रक्रियामध्ये बहुभाषीक ज्ञानाचे आव्हान उभे राहणार आहे.

नवीन राष्ट्रीय शैक्षणिक धोरणासमोरील आव्हाने निदर्शनास येत असले तरी हे शैक्षणिक धोरण बदलत्या परिस्थिती व परिवर्तनाला अनुसरून देशाचा सामाजिक, आर्थिक, तांत्रिक, औद्योगिक विकास या दृष्टीकोनातून आखले आहे. या शैक्षणिक धोरणामुळे विद्यार्थ्यांचा सर्वांगीन विकास घडून येण्यास अनमोल ठरणार आहे.

अध्ययनाचे महत्त्व :

सदरील अध्ययन हे नवीन राष्ट्रीय शैक्षणिक धोरणासंबंधी आहे. नवीन शैक्षणिक धोरणाचे स्वरूप, उद्दिष्टे, त्याची व्याप्ती आणि भविष्यात निर्माण होणारे आव्हाने या अनुषंगाने विद्यार्थी, शिक्षक, प्राध्यापक यांच्या मनातील समज-गैरसमज दुर करण्यास सहाय्यभूत ठरेल.

निष्कर्ष :

१) नवीन शैक्षणिक धोरण लवचिक, तांत्रिक व बहुविद्याशाखीय आहे.

- २) या शैक्षणिक धोरणात सर्वत्र स्तरातील विद्यार्थी, शिक्षक, प्राध्यापक यांच्या ज्ञान बुद्धीवर लक्ष केंद्रित केले आहे.
- ३) नवीन शैक्षणिक धोरणात अध्ययन अध्यापनाची व्याप्ती विस्तृत असून मुल्यमापनात लवचिकता आहे.
- ४) नवीन शैक्षणिक धोरणाची अमलबजावणी करताना अनेक आव्हाने समोर येणार आहेत.

**सारांश :**

नवीन शैक्षणिक धोरणाची रचना, प्रवेश, मुल्यमापन क्षमता आणि शैक्षणिक जबाबदारी या मार्गदर्शक तत्वाभोवती आयोजित केली गेली आहे. शिकवण्याच्या सर्वांगीण आणि बहुविधाशाखीय दृष्टीकोनाला प्रोत्साहन देऊन तंत्रज्ञानाचा लाभ घेऊन आणि संशोधनाला चालना देणारे आहे. या शैक्षणिक धोरणाचे उद्दिष्टे शिक्षणात परिवर्तन घडवून आणणे आहे.

**संदर्भ :**

- डॉ.काचोळे दा.धो. , सामाजिक शास्त्रीय संशोधन पध्दती कैलाश पब्लिकेशन्स, औरंगाबाद २००५.
- बिरादार रमेश, नविन राष्ट्रीय धोरण शिक्षण संक्रमण मासिक डिसेंबर २०२२.
- खेडकर महेश, नविन शैक्षणिक धोरण : एक अध्ययन शिक्षण संक्रमण मासिक आक्टोबर २०२२.
- <https://www.finoedexpress.com>.
- <https://www.Samaveshitshikshan.com>.
- <https://www.Mahamt.com.Encyc>.
- <https://www.Loksatta.com>.

◆◆◆

ISBN 978-81-19998-40-1



8th Edition

# TECHNOLOGY, INNOVATION AND SOCIAL MEDIA

CHANGING THE WAY OF TEACHING, LEARNING, RESEARCH IN EDUCATION

Volume - II

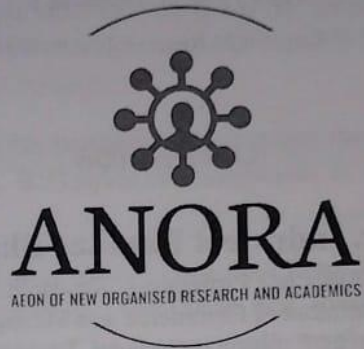


**Chief Editor : Dr. Indrajeet Bhagat**

[www.taranpublication.com](http://www.taranpublication.com)

March 2024





# **TECHNOLOGY, INNOVATION AND SOCIAL MEDIA**

**CHANGING THE WAY OF TEACHING, LEARNING, RESEARCH IN  
EDUCATION**

**CHIEF EDITOR : DR. INDRAJEET RAMDAS BHAGAT**

**Volume - II**



**Taran Publication  
New Delhi**

|

Chapter 14	Influence of Various Factors on consumer Preferences Towards Purchasing of Different Brand of High and Low Segment Four Wheelers <i>Dr. Lalit Kumar Dubey</i>	77
Chapter 15	Hawk-Eye Technology: A Benchmark In The Field Of Cricket <i>Dr. Vasant Gajaba Zende</i>	87
Chapter 16	Mathematical Models and Algorithms: Catalysts for Educational Innovation in the Digital Age <i>Dr. Bhimanand Pandurang Gajbhare</i>	93
Chapter 17	सीखने के नए क्षेत्र में सहयोगात्मक शिक्षण में सोशल मीडिया की भूमिका का अध्ययन <i>खुशबू ठाकुर</i>	100
Chapter 18	उच्च शिक्षा के शिक्षण-अधिगम और विकास प्रक्रिया पर सोशल मीडिया का प्रभाव <i>डॉ. पुष्पा रमेश</i>	106
Chapter 19	अध्ययन, अध्यापन आणि संशोधनात सोशल मीडियाची भूमिका <i>डॉ. राजेंद्र राऊत</i>	114
Chapter 20	मतदार जागृतीमध्ये प्रसार माध्यमांचे योगदान <i>प्रा.डॉ. मकरंद बळीराम जोगदंड</i>	117
Chapter 21	भारतातील क्रीडा क्षेत्रावर सोशल मीडियाचा होणारा प्रभाव: एक चिकित्सक अभ्यास <i>डॉ. प्रवीण भोसले</i>	122

## CHAPTER 20

## मतदार जागृतीमध्ये प्रसार माध्यमांचे योगदान

प्रा.डॉ.मकरंद बळीराम जोगदंड

राज्यशास्त्र विभाग प्रमुख, वसुंधरा महाविद्यालय, घाटनांदूर ता. अंबाजोगाई, जि बीड

## प्रस्तावना:

भारतात लोकशाही शासन प्रणाली असून येथे बहुपक्षीय पद्धती आहे. राजकीय पक्षांना सत्ता स्थापन करण्याकरीता बहुमताची आवश्यकता असते. बहुमत सिद्ध करण्याकरता निवडणुकीत जनतेचे मताधिक्य प्राप्त करावे लागते. निवडणुकीत वयाची 18 वर्षे पूर्ण झालेल्या नागरिकांना मतदानाचा अधिकार दिलेला आहे. नागरिक आपल्या मतदानातून लोकप्रतिनिधीची निवड करतात. जनतेने निवडून दिलेले लोकप्रतिनिधी राज्यकारभार करतात त्यामुळे लोकशाहीत नागरिकांच्या मताला अतिशय महत्त्व आहे. निवडणुकीतील एक एक मत सरकार सत्तेत आणू शकते व एक एक मत सरकार पाडू शकते, एवढी एका मतात ताकद असलेली दिसून येते. लोकप्रतिनिधींच्या राज्यकारभारावर जनता, समाज, समुदाय, राज्य, राष्ट्र यांचा विकास अवलंबून असतो. या सर्वच घटकांचा विकास घडून येण्याकरीता कार्यक्षम, कुशाग्र आणि जनकल्याणकारी लोकप्रतिनिधींची निवड होणे आवश्यक असते. अशा लोकप्रतिनिधींची निवड करण्याकरता सर्वच मतदारांनी मतदान करणेही आवश्यक असते. मतदानाचे प्रमाण वाढावे या करीता मतदारांमध्ये मतदान करण्याबाबतची जागृती करण्याचे कार्य प्रसारमाध्यमे मोठ्या प्रमाणात करित आहेत या प्रसारमाध्यमांची मतदार जागृती मधील भूमिका यांचे अध्ययन करण्याकरिता मतदार जागृतीमध्ये प्रसार माध्यमांचे योगदान या संशोधन विषयाची निवड करण्यात आली सदरील संशोधन विषयाच्या अध्ययनाला अनुसरून पुढीलप्रमाणे संशोधनाची उद्दिष्टे नमूद करण्यात आली आहेत.

## संशोधनाची उद्दिष्टे

1. मतदारांचा मतदानासंबंधीचा दृष्टिकोन अभ्यासणे
2. मतदार जागृतीची आवश्यकता आणि प्रसार माध्यमांच्या घटकांचा आढावा घेणे.
3. मतदार जागृतीमध्ये प्रसार माध्यमांची भूमिका अभ्यासणे. सदरील उद्दिष्टांच्या पूर्ततेकरीता खालील प्रमाणे गृहीतकांची मांडणी करण्यात आली आहे.



### संशोधनाची गृहीतके

1. मतदारांमध्ये मतदान जागृतीची मोठ्या प्रमाणावर आवश्यकता आहे. त्यासाठी प्रसार माध्यमे मतदारात मतदानाची प्रभावी जागृती करताना दिसत आहेत.
  2. प्रसार माध्यमामुळे मतदानाचे प्रमाण वाढले आहे.
- प्रस्तुत गृहीतकांच्या पडताळणीकरीता खालील प्रमाणे संशोधन पद्धतीचा अवलंब करण्यात आला आहे.

### संशोधन पद्धती

सदरील शोधनिबंधाच्या मांडणी करीता वर्णनात्मक संशोधन आराखड्याचा अवलंब करण्यात आला, तर तथ्य संकलना करीता द्वितीय स्रोतातील प्रकाशित तथ्यामधील संदर्भ ग्रंथ, मासिके, वर्तमानपत्रे, साप्ताहिके, शासनाचे अहवाल इत्यादींचा अवलंब करण्यात आला. तसेच अप्रकाशित तथ्यांमध्ये एम. फिल. व पी.च.डी.प्रबंध, खाजगी संस्थांचे अहवाल, इंटरनेट यांचा अवलंब करण्यात आला आहे.

### विषय प्रतिपादन

भारतात प्रामुख्याने इ.स. 1952 पासून लोकसभा आणि विधानसभा यांच्या निवडणुकांमध्ये मतदानाची प्रक्रिया सुरु झाली, तर इ.स. 1959 मध्ये स्थापन झालेल्या स्थानिक स्वराज्य संस्थांच्या निवडणुकांना 1962 पासून सुरुवात झाली. स्थानिक स्वराज्य संस्थांमधील ग्रामपंचायत, पंचायत समिती, जिल्हा परिषद, नगर परिषद, नगरपालिका, महानगरपालिका, वेगवेगळ्या संस्था, मंडळे इत्यादींच्या निवडणुकांमध्ये मतदानाला महत्त्व प्राप्त झालेले दिसून येते. नागरिकांनी लोकशाही आणि राजकीय प्रक्रियेमध्ये सहभागी व्हावे, मतदानाचा अधिकार पूर्णपणे बजवावा यासंबंधी प्रसार माध्यमे महत्त्वपूर्ण कार्य करीत आहेत.

### प्रसार माध्यमांचा अर्थ व स्वरूप

प्रसार माध्यमे म्हणजे माहिती व वार्ता अल्प कालावधीत अनंत व्यक्तीपर्यंत पोहोचविण्याकरता केलेली सुविधा होय. प्रसार माध्यमे ही दृकश्राव्य स्वरूपाची आहेत, यामध्ये वर्तमानपत्रे, मासिके, पोस्टर ही दृक स्वरूपाची माध्यमे आहेत. रेडिओ हे श्राव्य प्रसार माध्यम आहे तर माहितीचे प्रसारण करणारे टेलिव्हिजन, संगणक, इंटरनेट, मोबाईल, चित्रपट ही दृकश्राव्य प्रसार माध्यमे आहेत. या प्रसार माध्यमाद्वारे मनोरंजन वार्ता, सूचना वेगवेगळ्या विषयासंबंधी माहितीचे प्रसारण, मार्गदर्शन जनजागृती केली जात आहे. \*प्रसारमाध्यमांचे महत्त्व\*. प्रसार माध्यमे हे मनोरंजना वरोबरच महत्त्वपूर्ण माहितीचे प्रसारण करणारे साधन आहे. मनोरंजना युक्त माहितीमुळे कंटाळा निर्माण होत नाही तसेच ही माध्यमे विपुल माहिती अपेक्षित गटापर्यंत तात्काळ सूचना, संदेश पोहोचविण्याचे कार्य करतात, त्यामुळे श्रम, वेळ आणि पैसा यांची मोठ्या प्रमाणात बचत होते. आधुनिक

घटकासंबंधी जागृती घडून येते.मोबाईल वेबसाईट आणि पद्वारे मतदार जागृती आधुनिक काळात मोठ्या प्रमाणात प्रभावीपणे होत असलेली दिसून येते.

### मोबाईल वेबसाईट आणि पद्वारे मतदार जागृती

आधुनिक काळात मोबाईल, वेबसाईट आणि पद ही मतदार जागृतीची महत्वाची साधने निर्माण झाली असून त्याचे स्वरूप पुढील प्रमाणे अभ्यासता येईल.

**मोबाईल:** आधुनिक काळात मोबाईल एक दृकश्राव्य प्रभावी जनसंपर्क माध्यम निर्माण झालेले आहे. राजकीय पक्ष, उमेदवार मोबाईल द्वारे मतदारांना कॉल करून अथवा मेसेज पाठवून निवडणूक, राजकीय पक्ष,पक्षाचे चिन्ह, मतदान, दिनांक, वार, वेळ इत्यादीची माहिती देऊन मतदान करण्याची विनंती करताना दिसून येतात. त्यामुळे मतदारांमध्ये निवडणूक व मतदानासंबंधी जागृती निर्माण होत आहे.

**वेबसाईट अथवा इंटरनेट:** जनसंपर्क माध्यमाचे वेबसाईट अथवा इंटरनेट हे माहिती प्रसारण करण्याचे उत्तम माध्यम आहे. राजकीय पक्षांनी व नेते आपली वेबसाईट तयार करतात. त्यामध्ये पक्षाची भूमिका, ध्येय धोरणे, जाहीरनामे, केलेल्या कार्याची माहिती संक्षिप्त स्वरूपात नमूद केलेली आहे. ही माहिती मतदारांना केव्हाही पाहता येते. त्यामुळे राजकीय पक्ष, पक्षाची ध्येय धोरणे,आश्वासने,उमेदवार यासंबंधी मतदारांमध्ये जागृती घडून येत आहे.

**व्हाट्सअप:** व्हाट्सअप हे जनसंपर्काचे प्रभावी पद आहे व्हाट्सअप मध्ये मतदात्यांचा ग्रुप तयार केला जातो.या ग्रुपवर निवडणुकीचे स्वरूप, पक्ष,उमेदवार चिन्ह, इत्यादी लिखित स्वरूपात माहिती दिली जाते. त्यामुळे मतदारांना निवडणूक व मतदानासंबंधी संक्षिप्त स्वरूपात माहिती मिळते.

**फेसबुक व ट्विटर:** फेसबुक व ट्विटर हे जनसंपर्काचे प्रभावी माध्यमे आहेत. या दोन्ही पवर राजकीय पक्ष, उमेदवार, राजकीय नेते यांनी आपले नामांकन खाते काढलेले असते. या खात्यावरून आपल्या पक्षाची माहिती, उमेदवाराची माहिती, पक्षाचे कार्य, ध्येय, निवडणूक, चिन्ह इत्यादीची माहिती दिलेली असते. त्याचबरोबर मतदारांना मतदान करण्याचे आवाहनही केलेले असते. ही माहिती आपल्या खात्याशी जोडलेल्या मतदारांना मिळते. त्यामुळे मतदारांमध्ये निवडणूक आणि मतदान यासंबंधी जागृती घडून येते.

**इंस्टाग्राम व यूट्यूब:** इंस्टाग्राम व यूट्यूब ही माहिती प्रसारण करण्याची प्रभावी माध्यमे आहेत.या माध्यमावर राजकीय नेते,उमेदवार आपले वैयक्तिक खाते उघडून त्यावर राजकीय पक्ष, पक्षाचे कार्य, ध्येयधोरणे,जाहीरनामा, आश्वासने, निवडणूक, मतदान इत्यादीची माहिती देऊन मतदान करण्याचे आवाहन करतात. त्यामुळे मतदारांना राजकीय पक्ष, पक्षाची ध्येय, जाहीरनामा, निवडणूक, मतदान इत्यादीची माहिती सहज मिळते.

### अध्ययनाचे मातृत्व

आधुनिक काळात जलद गती प्रसार माध्यमांचा विकास झालेला आहे. या प्रसार माध्यमांमध्ये दृक, श्राव्य, रक्तश्राव्य माध्यमे आहेत. या माध्यमातून अशिक्षित, शिक्षित अशा सर्व स्तरातील मतदारांमध्ये राजकारण, राजकीय पक्ष, निवडणूक, मतदान इत्यादी घटकासंबंधी जागृती होत आहे. या राजकीय जागृतीमुळे लोकसभा, विधानसभा, स्थानिक स्वराज्य संस्थांच्या निवडणुकांमध्ये सरासरी 62 ते 73 टक्के मतदान होत आहे.

### सारांश

बोडव्यात सारांश रूपाने असे म्हणता येईल की, प्रसार माध्यमामुळे ग्रामीण व दुर्मिळ ठिकाणी वास्तव्य करणाऱ्या मतदारांमध्ये मतदानासंबंधी जागृती निर्माण होत आहे. ते निवडणुकांमध्ये सहभाग घेत आहेत. मतदानाच्या माध्यमातून प्रतिनिधी निवडीत आहेत. आज मतदारांना राजकीय पक्ष, राजकारण, उमेदवार, निवडणूक, मतदान यासंबंधी माहिती देण्याची आवश्यकता राहिलेली नाही. याबद्दल प्रसारमाध्यमांनी मोठ्या प्रमाणात बदल घडवून आणलेला दिसून येत आहे.

### संदर्भसूची

1. काचोळे दा धो, समाजशास्त्रीय संशोधन पद्धती, कैलास पब्लिकेशन, औरंगाबाद. 2003.
2. अहिरराव उज्वला जितेंद्र, माहिती तंत्रज्ञान, चिन्मय प्रकाशन, औरंगाबाद. 2010.
3. <https://mr.vikaspedia.in>
4. <https://www.loksatta.com>.
5. मतदान जागृती अभियान, मुंबई विद्यापीठ मुंबई. दि. 7-4-2016.
6. कोरडे समीक्षा, मतदार जागृतीमध्ये प्रसार माध्यमांचे कार्य, दै. सम्राट. दि. 16-3-2014.